Definition परिभाषा

किसी पद या शब्द की परिभाषा करने में उसकी आसन्नतम जाति (Proximate Genus) और गुण (Differentia) का कथन किया जाता है।

दूसरे शब्दों में, परिभाषा वह वाक्य है जिसमें पद की आसन्नतम जाति और व्यावर्तक गुण का कथन किया गया हो।

आसन्नतम जाति वह जाति है, जिसमें विशिष्ट वस्तु अथवा व्यक्ति सम्मिलित होता है।

उदाहरण के लिये मनुष्य आसन्नतम जाति 'प्राणी' का सदस्य है। इसीलिए उसमें प्राणित्व का गुण विद्यमान है।

व्यावर्तक गुण – मनुष्य को अन्य प्राणियों से भिन्न करने वाला गुण उसका व्यावर्तक गुण कहा जायेगा।

यह व्यावर्तक गुण बुद्धिमता अथवा विचारशीलता है। इस व्यावर्तक गुण को आसन्नतम जाति के स्वभाव के साथ जोड़ देने से मनुष्य पद की परिभाषा पूरी हो जाती है। इस प्रकार मनुष्य की परिभाषा के लिये यह कहा जायेगा कि मनुष्य एक विचारशील प्राणी है।

Types of Definition परिभाषा के प्रकार

नामात्मक परिभाषा Nominalistic Definition

नामात्मक परिभाषा नामों का अर्थ निश्चित करती है। वस्तुओं को एक दूसरे से अलग करने के लिए उन्हें नाम दिये जाते हैं और नाम की व्याख्या नाम की परिभाषा करती है।

नामात्मक परिभाषा यथार्थ परिभाषा नहीं है किन्तु वैज्ञानिक खोज में उसके कुछ इस्तेमाल हैं जिनमें से सबसे अधिक महत्वपूर्ण है –

(i) देश, काल और अवधान की बचत

प्रत्येक नाम किसी संपूर्ण वाक्य अथवा सिद्धान्त के लिए होता है। वैज्ञानिक सिद्धान्तों को नामात्मक परिभाषा से प्राविधिक (Technical) भाषा में अनुवाद के द्वारा भारी मानसिक बचत की जाती है। प्राविधिक पद न केवल भौतिक विज्ञानों में बल्कि सामाजिक विज्ञानों में भी प्रचलित है।

(ii) विचार की स्पष्टता Clarity of thought

नामात्मक परिभाषा परिचित वस्तु को अपरिचित पदों में अनुवाद करती है ताकि विचार स्पष्ट हो सके।

2. गुणार्थ / स्वभाववाचक से परिभाषा Definition by connotation

गुणार्थ यह दिखलाता है कि किसी शब्द अथवा प्रतीक का गुण क्या है। परिभाषा का यह प्रकार सामान्य रूप से परिभाषा का अर्थ नहीं है।

3 वास्तविक अथवा यथार्थ परिभाषा

यथार्थ परिभाषा शाब्दिक परिभाषा मात्र नहीं होती। वह शब्दों का नहीं बल्कि वस्तु का संकेत करती है। वास्तविक परिभाषा मनोवैज्ञानिक न होकर तार्किक होती है।

परिभाषा का मनोवैज्ञानिक अर्थ

1. Desire to learn the meaning
अर्थ सीखने की इच्छा

किसी पद की परिभाषा के पीछे सर्वाधिक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक प्रेरणा नये शब्दों के अर्थ को सीखने की इच्छा है। चूंकि परिभाषा अपरिचित शब्द की अधिक परिचित पदों से व्याख्या करती है इसलिए उससे अर्थ को सीखने का प्रयोजन पूरा हो जाता है।

2. सुविधाजनक संक्षिप्त अभिव्यक्ति

कोई भी अभिव्यक्ति जितनी ही लम्बी होती है उतनी ही असुविधाजनक होती है। लम्बी अभिव्यक्तियों के

Date: __/__/____ Page no: ____

स्थान पर लघु पदों के द्वारा परिभाषाओं का प्रयोग किया जाता है उदा. के लिये बुद्धिमत्ता के प्रेमी को दार्शनिक, चाचा के पुत्र को चचेरा भाई कहा जाता है

3/ अर्थ का बेहतर ज्ञान Better Knowledge of meaning
वैज्ञानिक और सामान्य व्यक्ति में यह अंतर होता है कि दोनों समान शब्दों और प्रतीकों का प्रयोग करते हैं, केवल वैज्ञानिक ही उनकी परिभाषा कर सकता है। यही कारण है कि सामान्य व्यक्ति की तुलना में वैज्ञानिक पदों के अर्थ को अधिक अच्छी तरह जानता है, यद्यपि दोनों ही उसका प्रयोग करते हैं। इस प्रकार किसी पद की परिभाषा का ज्ञान हमें उसके अर्थ में अधिक अंतर्दृष्टि प्रदान करता है

परिभाषा के नियम

1. संपूर्ण स्वभाव का कथन
किसी भी पद की परिभाषा करने में उसके संपूर्ण स्वभाव अथवा पूर्ण गुणार्थ का वर्णन किया जाना चाहिये उदाहरण के लिये मनुष्य की परिभाषा करने में उसे विचारशील और प्राणी कहना आवश्यक है
पूर्ण से कम अथवा अधिक कथन होने पर परिभाषा दोषपूर्ण हो जाती है इस नियम का पालन न करने से निम्नलिखित दोष उत्पन्न होते हैं —
स्वभाव से अधिक कथन करने से उत्पन्न दोष
(i) व्यर्थ परिभाषा (Redundant Definition)
यदि किसी परिभाषा में पूर्ण गुणार्थ के अतिरिक्त किसी ऐसे गुण का कथन किया गया है जो स्वभाव का अंग नहीं है बल्कि उसका परिणाम है तो इसमें व्यर्थ परिभाषा का दोष होता है
उदा. के लिए मनुष्य एक विचारशील प्राणी है इस

पद वाक्य में यदि यह जोड़ दिया जाये कि मनुष्य खेती करके अनाज उगाने वाला विचारशील प्राणी है तो इसमें खेती करके अनाज उगाना मनुष्य के गुणार्थ में शामिल न होने के कारण अनावश्यक परोक्षा है।

(ii) आकस्मिक परिभाषा (Accidental Definition)
इस दोषपूर्ण परिभाषा में, जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है, पूर्ण गुणार्थ के अलावा किसी आकस्मिक गुण को भी शामिल कर लिया गया है।
उदा० के लिये यदि यह कहा जाये कि मनुष्य एक हँसने वाला प्राणी है तो चूंकि हँसना मनुष्य का एक आकस्मिक गुण है इसलिए यह परिभाषा आकस्मिक परिभाषा है।

(iii) अव्याप्त परिभाषा (Too narrow Definition)
यदि परिभाषा में पूर्ण गुणार्थ (स्वभाववाचक) के अलावा किसी ऐसे गुण को शामिल किया गया है जो उस वर्ग के सभी जीवों में नहीं पाया जाता तो इससे अव्याप्त परिभाषा का दोष होता है।
उदा० के लिए यदि यह कहा जाए कि मनुष्य एक सभ्य बुद्धिमान प्राणी है तो चूंकि सभी मनुष्य सभ्य नहीं होते अर्थात् सभ्य होने का गुण सभी मनुष्यों में नहीं पाया जाता इसलिए मनुष्य की यह परिभाषा सब मनुष्यों पर लागू नहीं होगी और अव्याप्त परिभाषा बन जाएगी।

iv अतिव्याप्त परिभाषा (Too wide definition)
यदि पूर्ण गुणार्थ न देकर उससे कम कथन किया जाए तो अतिव्याप्त परिभाषा का दोष होता है क्योंकि उसमें पद के निर्देश में सम्मिलित वस्तुओं अथवा जीवों से कहीं अधिक वस्तुयें अथवा जीव शामिल हो जायेंगे।

Date: __/__/____ Page no: ______

उदाहरण के लिए यदि यह कहा जाए कि मनुष्य एक प्राणी है तो इसमें स्वभाव से कम कथन होने के कारण यह अतिव्याप्त परिभाषा हो जायेगी क्योंकि प्राणीत्व केवल मनुष्यों में ही नहीं होता बल्कि अन्य सब प्राणियों में भी होता है।

2/ परिभाष्य पद से अधिक स्पष्ट परिभाषा —
किसी भी पद की तार्किक परिभाषा वही पद हो सकता है जो कि परिभाष्य पद से अधिक स्पष्ट हो।
उदा० के लिए मनुष्य की परिभाषा करने में यह कहना कि मनुष्य सृष्टि का शिरोमणि है मनुष्य पद को कुछ भी स्पष्ट नहीं करता। परिभाषा के इस नियम को पालन के लिए यह आवश्यक है कि परिभाषा करने वाले पद में अलंकार अनेक अर्थ या दुर्बोध भाषा का प्रयोग नहीं होना चाहिए। इस नियम का पालन न करने से निम्न दोषपूर्ण परिभाषायें उत्पन्न होती हैं — i) आलंकारिक परिभाषा (Figurative Definition)
इस परिभाषा में आलंकारिक भाषा का प्रयोग किया जाता है उदा के लिए शेर की परिभाषा करने में यह कहा जाए कि शेर जंगल का राजा है तो इससे उसकी कुछ भी परिभाषा नहीं होती।

ii) दुर्बोध परिभाषा (Obscure Definition) — जिसमें अनेकार्थक या दुर्बोध ~~परिभाषा~~ भाषा का प्रयोग किया जाता है
इस प्रकार की परिभाषा में परिभाषा पढ़ने से कुछ भी ज्ञान नहीं होता। उदा के लिए यदि यह कहा जाए कि पेंशन एक भत्ता है जो किसी को बिना काम के दिया जाता है तो चूंकि इस प्रकार के भत्ते अन्य भी हो सकते हैं इसलिए इससे पेन्शन की परिभाषा नहीं हो सकती।

3/ परिभाषा में परिभाष्य पद या उसका कोई पर्याय नहीं होना चाहिए —
किसी भी पद की परिभाषा करने में यह ध्यान रखना

Date: __/__/__ Page no: __

आवश्यक है कि उसमें परिभाष्य पद या उसके पर्याय को सम्मिलित नहीं किया जाना चाहिये।
उदा. के लिए मनुष्य की परिभाषा करने में यह कहना ठीक नहीं है कि मनुष्य मनुष्य है अथवा कि मनुष्य मानवीय प्राणी है। पहली स्थिति में परिभाषा में परिभाष्य पद सम्मिलित है दूसरे उदाहरण में परिभाषा में परिभाष्य पद का पर्याय सम्मिलित है। उपरोक्त नियम का पालन न करने से पर्यायोक्ति परिभाषा अथवा चक्रिक परिभाषा का दोष होता है।

4/ परिभाषा यथा सम्भव निषेधात्मक नहीं होनी चाहिए -
इस नियम का पालन न करने से निषेधात्मक परिभाषा का दोष होता है।
उदा. के लिए यदि सत्य की परिभाषा करने में यह कहा जाये कि सत्य असत्य नहीं है तो इससे यह पता नहीं चलता कि सत्य क्या है, इससे केवल यही पता चलता है कि सत्य क्या नहीं है।

परिभाषा के उपरोक्त चारों नियमों को ध्यान में रखते हुए यह कहा जा सकता है कि परिभाषा पर्याप्त, परिभाष्य पद से अधिक स्पष्ट तथा पुनरुक्ति और निषेधात्मक दोष से मुक्त होनी चाहिये इस प्रकार की परिभाषा तार्किक कहलायेगी।

परिभाषा की सीमा

सभी पदों की परिभाषा नहीं की जा सकती। दूसरे शब्दों में परिभाषा की कुछ सीमायें होती हैं।

1/ सर्वोच्च जाति (Summum Genus) की परिभाषा नहीं हो सकती — किसी पद की परिभाषा करने में उसकी आसन्नतम जाति का कथन आवश्यक है किन्तु यदि कोई पद सर्वोच्च जाति दिखलाता है तो

उसकी आसन्नतम जाति न हो सकने के कारण उसकी परिभाषा नहीं की जा सकती।
उदा. के लिये 'सत्ता' शब्द की परिभाषा नहीं की जा सकती क्योंकि सत्ता से ऊँची कोई ऐसी जाति नहीं है जिसमें उसे रखा जा सके।

2/ एकवाचक, गुणवाचक नामों की परिभाषा नहीं हो सकती
वे नाम जो ऐसे गुण दिखलाते हैं जो एकवाचक हैं और जिनसे अधिक सरल कोई गुण नहीं हो सकता उनकी परिभाषा नहीं की जा सकती।
उदा. के लिए सुन्दरता, समानता इत्यादि की परिभाषा नहीं की जा सकती।

3/ व्यक्तिवाचक नामों और वस्तुओं की परिभाषा नहीं की जा सकती – परिभाषा करने के लिये पूर्ण गुणार्थ का कथन आवश्यक है। व्यक्तिवाचक नामों का कोई गुण नहीं होता। मोहन, राम, सोहन आदि व्यक्तिवाचक नामों की परिभाषा नहीं जा सकती। इसी प्रकार वस्तु में अनन्त गुण होते हैं। अतः उनकी परिभाषा नहीं की जा सकती।

तर्कशास्त्र में परिभाषा की उपयोगिता

→ तार्किक विचार की दृष्टि से सबसे पहले यह आवश्यक है कि हम विचारणीय विषय की परिभाषा कर लें ताकि व्यर्थ वाद-विवाद न हो। उदा. के लिए भिन्न भिन्न लोग ईश्वर पद के भिन्न-भिन्न अर्थ करते हैं और उसे लेकर व्यर्थ वाद-विवाद करते हैं। यदि ईश्वर पद की परिभाषा कर दी जाये तो उसके विषय में जो कुछ भी विचार विनिमय होगा वह लाभदायक होगा।

→ तर्कशास्त्र विचारों की सत्यता का विज्ञान है। वह विचारों की सत्यासत्य की परख करता है। इसीलिए तर्कशास्त्र में किसी भी पद पर विचार करने से पूर्व उसकी परिभाषा करना आवश्यक माना जाता है।

परिभाषा करने से पूर्व परिभाषा की परिभाषा करना जरूरी है क्योंकि यदि भिन्न भिन्न लोग परिभाषा करने के भिन्न भिन्न अर्थ लगायेंगे तो विचारों की सत्यता असम्भव हो जायेगी। इसीलिए तर्कशास्त्र में परिभाषा की परिभाषा की जाती है, उसके दोषों का विवेचन किया जाता है और उसके नियमों को स्पष्ट किया जाता है।

पदों का वर्गीकरण (classifaction of terms)

Single worded and many worded terms

1/ एक शब्दात्मक तथा अनेक शब्दात्मक पद

जिस पद में केवल एक शब्द हो उसे 'एकशब्दात्मक' पद कहा जाता है जैसे - मनुष्य, राजा, कॉलेज, student आदि।

' जिस पद में एक से अधिक शब्द हो, उसे 'अनेकशब्दात्मक' पद कहा जाता है। जैसे - मोहन का लड़का, बी. एन. कॉलेज का विद्यार्थी, Prof. of Patna College आदि।

एकशब्दात्मक पदों को सरल (simple) और अनेकशब्दात्मक पदों को संयुक्त (composite) भी कहा जाता है।

2/ एकार्थक तथा अनेकार्थक पद Univocal and equivocal te

एकार्थक पद वे है जिनका केवल एक अर्थ में प्रयोग हो। जैसे - मनुष्य, सेना, राम, house, pen

अनेकार्थक पद वे पद जिनका एक से अधिक अर्थों में प्रयोग हो। जैसे - रश्मि, द्विज, Page इसका अर्थ एक से ज्यादा होता है -

रश्मि का अर्थ है किरण या घोड़े की लगाम

द्विज का अर्थ है ब्राह्मण या पक्षी

Page का अर्थ है पन्ना या नौकर

3/ एकव्यापी तथा अनेकव्यापी पद Singular and general terms

जिस पद से केवल एक वस्तु या व्यक्ति का बोध हो वह एकव्यापी पद कहलाता है। जैसे ताजमहल, कृष्ण की रानी, एक आदमी पटना यूनिवर्सिटी के वर्तमान कुलपति, कलकत्ता आदि।

जिस पद से किसी वर्ग के प्रत्येक व्यक्ति का बोध हो उसे अनेकव्यापी पद कहा जाता है। जैसे - मनुष्य, घोड़ा, कलम, देश सेवक आदि।

4/ समूहवाचक तथा असमूहवाचक पद

समूहवाचक पद उसे Collective and Non collective कहते हैं जिसमे एक तरह की वस्तुओं के एक समुदाय का बोध होता है। जैसे - सेना, कक्षा, पुस्तकालय, सरकार, Jury, navy आदि। सेना अनेक सिपाहियों के समुदाय का नाम है।

जिस पद से किसी समूह का बोध नहीं हो वह असमूहवाचक पद है। जैसे - मनुष्य, जॉन, सिपाही, आदि।

5/ निश्चित तथा अनिश्चित पद Definite and Indefinite terms

निश्चित पद वह है जिससे किसी वस्तु-विशेष अर्थात खास व्यक्ति या वर्ग का बोध हो जैसे - गंगा नदी, सूर्य, बिहार के वर्तमान मुख्यमंत्री आदि।

अनिश्चित पद वह है जिससे किसी खास व्यक्ति या वर्ग का बोध न हो। जैसे नदी, मनुष्य, एक आदमी, बिहार के मुख्यमंत्री आदि।

अनेकव्यापी पद अनिश्चित होते हैं। पर जब उनसे संपूर्ण वर्ग का बोध हो, तब वे निश्चित हो जाते हैं, जैसे - सब अंग्रेज सभी भारतीय प्रत्येक मनुष्य आदि। एकव्यापी पद निश्चित और अनिश्चित दोनों होते हैं।

Date: ___ Page no: ___

Concrete and Abstract terms

6/ द्रव्यवाचक तथा भाववाचक पद

द्रव्यवाचक पद वह है जिससे किसी वस्तु का बोध हो। जैसे - विद्यार्थी, पुस्तक, कलम, घर, परी आदि। इन पदों से वस्तुओं का बोध होता है। ये द्रव्यवाचक पद हैं। वस्तु वह है जिसका इन्द्रियों के द्वारा ज्ञान होता हो या हो सकता।

भाववाचक पद वह है जिससे केवल गुणों का बोध हो। जब गुणों को वस्तुओं से अलग करके विचारते हैं, तब ये गुण भाववाचक पद कहे जाते हैं। गुण द्रव्य से पृथक् तो नहीं रह सकते, पर उन्हें उनसे अलग कर विचारा जा सकता है। जैसे - बालकपन, बुढ़ापा, लाली, whiteness, goodness, humanity आदि।

7/ भावात्मक, अभावात्मक तथा राहित्यवाचक (पर्युदासक)

Positive, negative and Privative terms

भावात्मक पद वह जिससे किसी वस्तु या गुण का रहना पता चले जैसे - बुद्धिमान, मनुष्य, घर, रोशनी इत्यादि। 'बुद्धिमान' से बुद्धि की उपस्थिति का पता चलता है। 'मनुष्य' से एक प्राणी की उपस्थिति का बोध।

अभावात्मक पद वह है जिससे किसी चीज का केवल न रहना अर्थात् अभाव का बोध हो। जैसे - अश्वेत, अ-परिश्रमी, अबद्ध इत्यादि।

पर्युदासक पद से किसी चीज की वर्तमान अनुपस्थिति का बोध होता है। ये पद किसी गुण का वहाँ अभाव बताते हैं जहाँ साधारणतः उसके रहने की योग्यता है जैसे अंधा, लंगड़ा, काना। अंधा वह है जिसे आँख की ज्योति नहीं है, पर साधारणतया आँख में ज्योति रहती है।

Date: / / Page no:

8) Absolute and relative terms
स्वतंत्र तथा सम्बद्ध पद

स्वतंत्र पद वह है, जो बिना दूसरे पद का अर्थ समझे, अपना अर्थ स्वयं व्यक्त कर दे। इसमें बिना किसी अन्य पद की सहायता से अर्थ स्पष्ट हो जाता है, जैसे - गाय, घर, मनुष्य आदि।

सम्बद्ध पद वह है जिसका अर्थ किसी दूसरे पद के संबंध से ही समझा जा सकता है। यह बिना दूसरे पद की सहायता के स्पष्ट नहीं हो सकता। जैसे पिता-पुत्र, राजा-प्रजा, पति-पत्नी आदि

9) स्वभाववाचक तथा नि: स्वभाववाचक पद
Connotative and non Connotative terms.

ऐसा पद जिससे किसी वस्तु का और उसके सारगुण का बोध हो उसे स्वभाववाचक कहा जाता है जैसे मनुष्य, कलम, घर आदि। मनुष्य पद से उन व्यक्तियों का बोध होता, जिन्हें इस नाम से पुकारा जाता है और उन व्यक्तियों के सारगुणों का भी (विवेक शक्ति और प्राणित्व का) जिनके कारण वे उस नाम से जाने जाते हैं।

वह पद जिससे केवल वस्तु का या केवल गुण का बोध हो नि: स्वभाववाचक कहा जाता है जैसे - श्याम, ललाई, सफेदी आदि। 'श्याम' पद से केवल वस्तु का बोध होता है जो उस नाम से पुकारा जाता है। ललाई से केवल एक गुण का संकेत मिलता है।